ISSN 2350 - 1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 13, अंक : 49, जनवरी-मार्च 2026

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

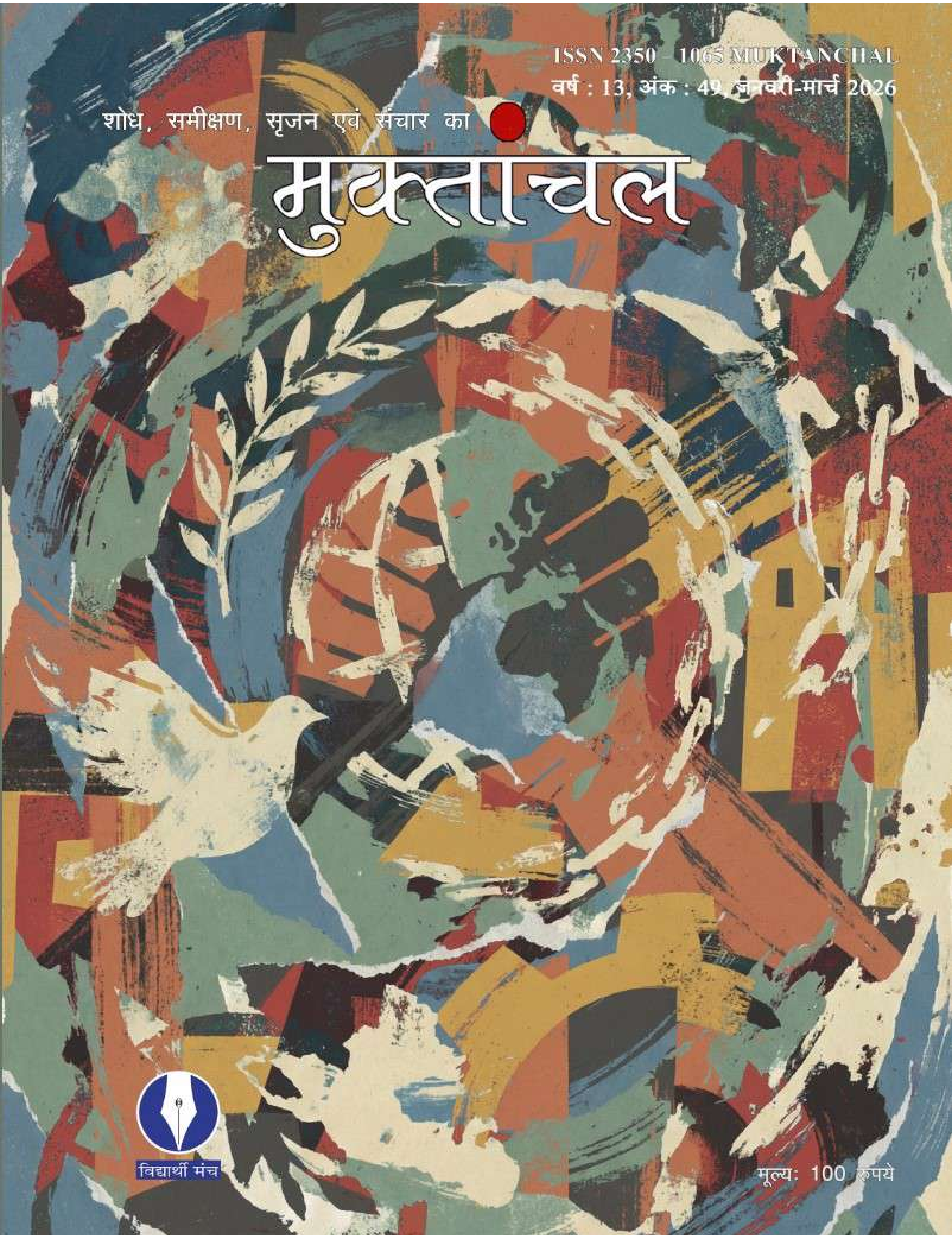

विद्यार्थी मंच

मूल्य: 100 रुपये

उस पार से ...

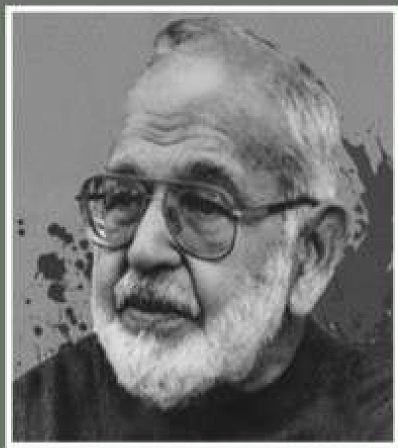

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

7 मार्च 1911 - 4 अप्रैल 1987

देहरी पर दीया

देहरी पर दीया
बाँट गया प्रकाश
कुछ भीतर, कुछ बाहर :
बँट गया हिया-
कुछ गेही, कुछ यायावर।
हवा का हलका झोंका
कुछ सिमट, कुछ बिखर गया
लौ काँप कर फिर थिर हुई :
मैं सिहर गया।

- ऐसा कोई घर आपने देखा है, 1986

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

वर्ष: 13, अंक: 49, जनवरी-मार्च 2026

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा
प्रकाशक : विद्यार्थी मंच
प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय
कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

पंकज साहा : प्राक्तन अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
धनेश दत्त पांडेय : कथाकार एवं आलोचक
आशुतोष सिंह : कवि एवं व्यंग्यकार
कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम, यू०के०
अरुण कुमार : प्राक्तन प्राध्यापक, राँची विश्वविद्यालय
मृत्युंजय श्रीवास्तव : संस्कृतकर्मी और विचारक
प्रकाश कु. अग्रवाल : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगवासी कॉलेज
चित्रा माली : प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
विजया सिंह : रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय आसनसोल
उत्सव सिन्हा : वर्चुअल प्रोडक्शन स्पेसिअलिस्ट, मुंबई

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन

विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, नगीना लाल दास, प्रीति सिंह, अनीता ठाकुर एवं रुद्रकान्त झा

संपर्क एवं प्रसार :

विनोद यादव : 9007517546, पद्माकर व्यास : 9433196407
चांदनी सिन्हा (बर्मिंधन, यू०के०) : +447411412229

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev 010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

मुद्रक : **गाथा प्रकाशन,** 6/2/1, आशुतोष मुख़र्जी लेन, हावड़ा - 711106

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ० धूपनाथ प्रसाद : प्राक्तन प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
डॉ० विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय), कोलकाता.
डॉ० मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद
डॉ० मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन
डॉ० अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात, पश्चिम बंगाल
डॉ० मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ० सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ० अंजनी कुमार झा : प्राध्यापक, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
डॉ० शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता
डॉ० सुनील कुमार 'सुमन': प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
डॉ. अमित राय : प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

मुक्तांचल : A/C. 50200014076551, HDFC Bank BURRABAZAR, KOLKATA-700007. IFSC CODE-HDFC0000219

संपर्क:
डॉ० मीरा सिन्हा (संपादक) : 9831497320
सुशील कुमार पाण्डेय : 9681105070

ई-मेल muktanchalpatrika@gmail.com/ sinhameera48@gmail.com

पत्रिका का मूल्य : एक अंक 100 रुपये
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये
डाक खर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 45 रुपये

शोध समीक्षण सृजन संचार

अवस्थिति

06 **संस्तुति**

आलेख

07	राजीव रंजन प्रसाद	हिंदी लेखन की दार्शनिकता : अपोह और पंचकोष मॉडल आधारित परा-चिंतन
15	अमित राय	भाषा विमर्श की दिशाहीनता
21	दत्तात्रय मुरुमकर	लोक, संस्कृति और सहजबोध
26	अरुण अर्णव खरे	हिंदी व्यंग्य स्तंभ-लेखन की परंपरा और समकालीन परिदृश्य
31	वरुण कुमार तिवारी	फणीश्वरनाथ रेणु: जीवन-संघर्ष और कथा-दृष्टि
39	सत्य प्रकाश दुबे	लिखना मेरे लिए साँस लेने की तरह है: विनोद कुमार शुक्ल
43	महेश जायसवाल	कवि-पत्रकार शैलेन्द्र शांत की कविताओं पर एक दृष्टि

विमर्श

46	अंजनी कुमार झा	एआई के आगे हम बेबस
49	सीमा कुमारी साह	ओम प्रकाश वाल्मीकि की रचनाओं में दलित वेदना
53	रीता कुमारी जायसवाल	मिथकीय नाटक और भारतीय संस्कृति

शोधार्थी की कलम से

57	अनूप प्रसाद	मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में अस्मिता और आत्मसम्मान
61	प्रियंका सिंह	मौन विलाप से विद्रोह तक यात्रा करती महाश्वेता देवी की सुजाता

कहानी

64	महेंद्र तिवारी	भरोसे का रिश्ता
67	संदीप तोमर	प्यार नहीं तो क्या है
72	सुरेंद्र पटेल	पी. टी. एम.

सरगम के सुर साधे

79	नरेश सक्सेना	कविता का अनिवार्य अनुशासन: लय, संरचना और प्रेम

कविता

83	पूनम सिंह	ऊँटनी, नींद में
84	देव नाथ द्विवेदी	गजल
85	आशुतोष सिंह	गजल
86	विक्रम सिंह	निर्लिप्त गति, कुत्ते

शोध समीक्षण सृजन संचार

88 सुशील कुमार पांडेय — कैद से जागेगा देश, तुलना मत करो
89 मिथिलेश आदित्य — जड़ों की तलाश, स्मृतियों में बंद ताला

समय की शिला पर
90 शंकरानंद — कविता मेरे लिए हवा पानी की तरह जरूरी है

साक्षात्कार
94 **मोहम्मद हारून रशीद खान** — साहित्य का लक्ष्य सत्य के साथ खड़े होना है: उर्मिला शिरीष

देशांतर
100 स्नेहा सिंह — अगाथा क्रिस्टी: दुनिया की सबसे लोकप्रिय सस्पेंस थ्रिलर लेखिका

संस्मृति
102 डी. एन. प्रसाद — राजी सेठ : अथ रचनावली कथा
105 अमरनाथ — प्रो. चंद्रकला पाण्डेय : तीस बरस का साथ
110 विनोद साव — श्रीलाल शुक्ल से पहली मुलाकात
113 अरुण होता — ज्ञानरंजन : एक उत्कृष्ट गद्यशिल्पी और बेहतर इंसान
115 सुरेश शॉ — जे. पी. नगर / वाया सिताब दियारा

पुस्तक समीक्षा
118 गीता दूबे — कविताओं में गुँथी मनुष्यता की चिंता: सिद्धेश की कृति सागर प्रार्थना
121 पंकज साहा — दोहा का मजबूत स्तंभ : ज्ञानचंद मर्मज्ञ का आरोही
124 ख़ुदेजा खान — प्रभा मुजुमदार की लेखनी :विसंगतियों के विरुद्ध मजबूती से खड़ी है
126 अमल सिंह ‘भिक्षुक’ — ताक पर दुनिया और मनुष्यता की खोज
128 प्रकाश कुमार अग्रवाल — बंगाल की सांस्कृतिक विरासत का जीवंत दस्तावेज : ‘पश्चिम बंगाल की लोक-कथाएँ’
129 देवी नागरानी — डॉ. कृष्ण कन्हैया की कृति ‘जिंदगी की किताब’: दोनों तरफ़ से पढ़ी जाने वाली संवेदनाओं का आख्यान

130 **अभिमत** — धूपनाथ प्रसाद, राजनारायण बोहरे, वरुण कुमार तिवारी, जयप्रकाश मानस, नितिन सेठी, देवेन्द्र उपाध्याय, रमेश गौतम, लवलेश दत्त, सुनील कुमार मानस, प्रकाश कुमार अग्रवाल

136 **गतिविधियाँ**
138 **समीक्षार्थ पुस्तकें**

साहित्य भाषा के धागे में शब्दों की मनका से गुंथा एक मनिहार है। साहित्य का मनिहार सोच और संवेदना के सम्मोहन से समायोजित रहता है। सोच पर थाप पड़ते ही संवदेना उद्वेलित हो उठती है, जीवन का राग वहीं सृजन के नर्तन से जुड़ कर आलाप लेता है। समय आज विषाद की रागिनी गा रहा है। वर्चस्व की आँधी में उन्माद के काले बादलों ने युद्ध का आवाहन किया है और हथियाने का हडकंप बदस्तूर जारी है। सारी दुनिया में मानवता लहूलुहान होकर जार-जार रो रही है। उद्वेलन और अतिरेक का वक्त अपने चरम पर है। आसमान धुएँ और गुबार से भरा हुआ है और धरती पर छितराया हुआ है इन्सानियत का खून, वर्चस्वधारी चिंघाड़ रहे हैं, अन्याय ही न्याय का पर्याय बन गया है, ऐसा विपर्यय कम ही देखा जाता है। हर अति अपने अंत को ही जाती है। आज की काली रात भी हमारी जागने की लड़ाई को तेज करेगी और हम मानवता के पक्ष में एक नई सुबह का स्वागत करने में सक्षम हो जाएँगे। आज पूरी दुनिया में चाहे वह देश हो या विदेश विभेद का जहर फैला हुआ है। असहिष्णुता और संकीर्णता का दानव इन्सानियत पर हमलावर है। अपने-अपने आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृति, भाषा और साहित्य सबके बीच ऊँची दीवार खड़ी की जा रही है और अमन का पक्षी शृंखलाओं में आबद्ध फडफडाता हुआ दम तोड़ रहा है।

कोई भी भाषा और उसका साहित्य किसी विशेष धर्म और समुदाय का नहीं होता वह निर्बाध होता है विचारों और संवेदनों से गुंथा एक ऐसा मनिहार होता है, जिसे जैसे चाहे अपनाया जा सकता है। लेकिन, दुखद है कि आज भेदभाव और संकीर्णता की विषैली हवा मानवीय पर्यावरण को दूषित करने की कोशिश कर रही है।

मुक्तांचल के प्रकाशन की यात्रा इस अंक के साथ तेरहवें वर्ष पर पहुँच चुकी है। इस वर्ष का यह अंक सामान्य है- आप इस अंक में प्रस्तावित घोषणाओं से अवगत हों और लेखकीय तथा पाठकीय स्तर पर जुड़ें। मुक्तांचल-48 कथालोचक एवं समीक्षक मधुरेश जी पर संयोजित किया गया था। इस अंक का अतिथि संपादन धनेश दत्त पाण्डेय ने किया था, मधुरेश विशेष अंक पर कुछ महत्वपूर्ण अभिमत इस अंक में शामिल हैं। मुक्तांचल का अगला अंक (अप्रैल-जून 2026) स्वर्ण अंक (50वाँ अंक) है। यह अंक आप सबके विशिष्ट भागीदारी से महत्वपूर्ण बन सकेगा। इस अंक में कलकत्ता (20वीं सदी तक) से कोलकाता (2001 से अब तक) के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अवदानों की चर्चा शामिल होगी, आप सभी बंधुओं से अनुरोध है कि अपने-अपने सुझाव प्रेषित करें। अतिरिक्त दो अंक दो विषयों पर स्थिर हो चुके हैं। धर्मवीर भारती के जन्मशताब्दी वर्ष पर केंद्रित अंक (जुलाई-सितंबर 26) के अतिथि संपादक हैं डा. धूपनाथ प्रसाद। मुक्तांचल का 52वाँ अंक (अक्तूबर-दिसंबर 26) बाल साहित्य पर होगा। इस अंक के अतिथि संपादक हैं डॉ. पंकज साहा। इन अंकों में लेखकीय हिस्सेदारी के लिए आप अतिथि संपादक से संपर्क कर सकते हैं। पृष्ठ 14 एवं 87 पर क्रमशः धूपनाथ प्रसाद एवं पंकज साहा का संपर्क अंकित है।

मुक्तांचल का प्रमुख उद्घोष साहित्य और संस्कृति में सामासिकता एवं सामंजस्य की सिफारिश है, आइए इस स्वप्न को साकार करें, आपका सुझाव एवं सहयोग हमें समृद्ध करेगा।

मीरा सिन्हा

संपादक